□□□□ □□□□□ □□□

□□□□□ □□□□□

जनसत्ता 1 मई, 2014 : वश्वि केसर्वाधकिप्राचीन जीवंत नगर केरूप में बनारस की ख्यातपिर भी काल का पहयिा अपने प्रभाव दखिाता रहा है□

भगवान शंकर केत्रशिूल पर टकिी काशी की सनातनी मान्यता वाला यह शहर 'अवमिुक्त क्षेत्र' केरूप में भी प्रसद्धि रहा है और आस्थावानों केलएि 'सर्वोत्तम मृत्यु' और 'मोक्ष' केनगर केरूप में भी□ महात्मा बुद्ध की उपदेश-स्थली, गुरुरामदास का मानव-अध्यात्म स्थल, कबीर केलएि उलटबांसयिों वाला नगर, संत रैदास, मरि्□ा □ालबि का 'चरिा□-□-दहर', पंडति मदन मोहन मालवीय की 'सर्ववद्यिा की राजधानी', डयिाना □क्क केलएि 'सटिी ऑफ लाइट', न□ीर बनारसी का 'गंगो-जमुन' का शहर बनारस काल केप्रभाव से अछूता माना जाता है□ कुछ-कुछ आत्मा की अनश्वरता सदृश छवलिएि यह शहर समय केथपे□ों से जूझता हुआ □कऐसे दौर में आ पहुंचा है जसिमें इसकेअतीत को भवष्यि से जो□ने वाला वर्तमान कसिी उद्धारककी बाट जोहता प्रतीत होता है□

प्रदूषति गंगा, गंदी गलयिां, पानी-बजिली-स□ककी अंतहीन समस्या, चरमराती कानून-व्यवस्था, बेरोजगारी और बेतरतीब फैलाव बनारस केवर्तमान केकुछ ऐसे पहलू हैं जो इसकेभवष्यि केसंदर्भ में □कनराशाजनकपरदृश्य नर्मिति करते हैं और आसानी से दखि जाते हैं□ साथ ही, ये बनारस केवे पहलू हैं जो कसिी भी सामान्य समस्याग्रस्त नगर केहो सकते हैं और जन्हिें प्रशासनकिप्रयासों केसहारे ठीककयिा जा सकता है□

पर इसका □कअर्ध-दृश्य वर्तमान भी है जसिमें बुनकरों और परंपरागत हदिू कर्मकांडयिों और धर्मजीवयिों की आर्थकि, सामाजकिऔर सांस्कृतकि बदहाली, यहां जीवंत रहे लघु-भारत केस्वरूप का क्रमश: समटिते-संकुचति होते जाना, 'अतथिदिेवो भव' केभाव का 'अर्थ देवो भव' में परवर्तिति होते जाना, गंगाजी केकनिारे यहां की शताब्दयिों पुरानी बहुसांस्कृतकिबसावट में से बांग्ला-भाषयिों केनष्किासन और पलायन, मंदरिों में दुर्व्यवस्था और उनकी उपेक्षा, धर्म केआधार पर बस्तयिों का वशिेषीकरण और वदिेशी पर्यटकों केप्रभाव में देशी पर्यटकों की अघोषति, अलखिति उपेक्षा केतत्त्व भी सम्मलिति हैं□ ये तत्त्व उन परस्थितियिों से जनमे हैं और उन प्रक्रयिाओं का प्रतनिधित्वि करते हैं जो बनारस की आगे की यात्रा को बाधति करती रहेंगी, अगर समय रहते नयिंत्रति नहीं की जा सकीं तो!

□कविशिष्ट क्षेत्र की छवि रखने वाले बनारस की यह विडंबना रही है कि राजनीतिक प्रतिनिधित्व और वोट के आंकड़ों के खेल में कुछ दशकों से इसे न□ सिर्फ से बस्तियों, वर्गों और समूहों में बांट दिया गया है□ इसका यह विभाजन राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों द्वारा चुनावों के समय आंकड़ों की बिसात पर लोगों को दिखा-दिखा कर सम्मोहित या भयभीत करके और भी स्पष्ट कर दिया जाता रहा है, इस सीमा तक कि चुनाव-दर-चुनाव इसकी साख दांव पर लगती प्रतीत होने लगी है□

मगर जैसा कि हर चरम स्थिति के बाद होता है, 2014 के आम चुनावों में बनारस संसदीय क्षेत्र का चुनाव भी □क 'घोर-चुनाव' के रूप में उभरा है जो हमेशा जीवंत रहने वाले इस शहर के राजनीतिक भाग्य-विधाताओं और ठेकेदारों से उनकी भांग के नशे के समान नींद का हिसाब मांगता दिख रहा है□ यह चुनाव इस नगर की राजनीतिक विरासत पर □क गंभीर प्रश्न बन कर भी उभरा है कि वैश्विक स्तर पर मानव सभ्यता, संस्कृति और अध्यात्म को राह दिखाने वाला बनारस आज अपने ही अस्तित्व और छवि के संदर्भ में छटपटाता और संघर्ष करता क्यों दिख रहा है?

स्थिति चाहे जो हो, बनारस को 2014 के आम चुनावों की प्रक्रिया में □कविशिष्ट राजनीतिक पहचान मिल रही है और इस संदर्भ में इस पर केंद्रित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय चर्चाओं के प्रभाव में इसकी प्रतिष्ठा बढ़ी है□ इसे मनाने के लि□ कई ऐसे प्रयास प्रारंभ कर दि□ है जो इसके पहले कभी नहीं देखे ग□□

ऐसे प्रयासों में पारंपरिक चुनावी वायदों के साथ भारतीय जनता पार्टी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर अपूर्व ढंग से उछाला गया 'ब्रांड इंडिया' का □कनारा है, जो विकास के मुद्दों को चुनावी मंच पर रखते हु□ भविष्य को समृद्ध बनाते हु□ अतीत के गौरव की वापसी के सपने दिखा रहा है□

कैलाश चौरसिया और विजय जायसवाल के साथ नरेंद्र मोदी, अरविंद केजरीवाल, अजय राय जैसे उम्मीदवारों की उपस्थिति ने बनारस में आम मतदाताओं के समक्ष वैचारिक ऊहापोह और भ्रम की स्थिति निर्मित कर दी है□

साथ ही, नरेंद्र मोदी के बनारस के साथ-साथ वडोदरा से भी चुनाव ल□ने के कारण मतदाताओं के समक्ष रह-रह कर विवाह के पूर्व ही □क संभावित रूमानी विवाह के बाद विवाह-विच्छेद की आशंका□ उभर जा रही है□ हालांकि मुख्तार अंसारी के चुनावी मैदान से हट जाने और अफजाल अंसारी द्वारा हाल ही में की गई नरेंद्र मोदी की प्रशंसा की रणनीतिक पृष्ठभूमि यह भी संकेत करती है कि राजनीति के गलियारे में अवसरवादिता अब स्पष्ट तौर पर प्रभावी और स्वीकार्य हो चुकी है□

मोदी के विशेषकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हाल ही में आ□ साक्षात्कारों में दि□ ग□ संकेतों से भी इस संभावना की पुष्टि होती दिखती है कि अगर वे वडोदरा और बनारस दोनों ही जगहों से विजयी होते हैं तो बनारस को ही अपना संसदीय क्षेत्र बना□गे□ यहां यह देखना भी महत्त्वपूर्ण है कि उनके साक्षात्कारी संकेतों ने 'ब्रांड इंडिया' की तर्ज पर 'ब्रांड बनारस' की संभावनाओं को विचार-विमर्श के लि□ उछाल दिया है□

ऐसे में □क स्वाभाविक प्रश्न यह बनता है कि क्या चुनाव परिणाम के बाद बनारस भी □क ब्रांड के रूप में विकसित किया जा सकेगा? अगर हां, तो किस प्रकार? और साथ ही यह भी कि इसका स्वरूप क्या होगा- ढांचागत विकास पर केंद्रित, आजीविका और रोजगार पर केंद्रित, पर्यटन पर केंद्रित, सांस्कृतिक विरासत और अतीत के गौरव पर केंद्रित या इन सबको समेटे □क 'समावेशी बनारस' पर केंद्रित? 'ब्रांड बनारस' की उक्त सभी संकल्पनाओं को राजनीतिक,

आर्थिक और प्रशासनिक इच्छाशक्ति के सहारे स्थापित किया जा सकता है, सिवाय अंत में उल्लिखित ‘समावेशी बनारस’ प्रारूप के। ‘ब्रांड बनारस’ के ‘समावेशी बनारस’ प्रारूप के निर्माण के लिए यहां की पुरपेच गलियों में बना दी गईं धार्मिक और सांस्कृतिक दरारों को पाटना प्राथमिक और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य होगा।

इन दरारों में फंस कर जहां इसकी सनातनी परंपरा विद्रूपित हो रही है वहीं परंपराओं और सामाजिक-सांस्कृतिक विशिष्टताओं की ‘द्वितीयो नास्ति’ की थाती लिए पूरे विश्व में भारत की एक अलग पहचान बनाने वाले बनारस के वस्तु-स्थल पर भौतिकता की मार ने इसके बहुधार्मिक-बहुसांस्कृतिक समूहों को एक दूसरे के प्रति एक सीमा तक अविश्वसनीय और असहिष्णु बना दिया है। ‘लघु भारत’ की भी संज्ञा से विभूषित इस शहर में शताब्दियों से देश के अधिकतर प्रांतों के लोगों की उपस्थिति रही है। उनके यहां आकर बसने के उद्देश्य चाहे जो रहे हों, पर उन्होंने धर्म, संस्कृति, ज्ञान, अध्यात्म, दर्शन, जीवन-मूल्यों और प्रगतिशीलता के स्तर पर एक-दूसरे को अपनाया और सराहा है, संकटकाल में एक-दूसरे का संबल और प्रतिपूरक बन कर भी उभरे हैं।

पर सनातनता का अलख जगाने में निरंतर जगते रहने वाले बनारस में पिछले कुछ दशकों से ‘इन्स्टैन्ट मोक्ष’, ‘इन्स्टैन्ट योगा’, ‘गिरिस्तागीरी’ और ‘माफिया संस्कृति’ ने इसके समावेशी ताने-बाने को जिस तरह से, और जहां-जहां से कुतरा है उसकी मरम्मत चाणक्य और अरस्तू की आदर्श प्रशासकों की कल्पना के चरितार्थ हुए बिना संभव नहीं दिखती है। अपनी मस्ती को भूल कर, अपने बिंदासपन को खोकर अकबकाया यह शहर गंगाजी के घाटों पर, मंदिरों, मस्जिदों, गुरद्वारों, गिरिजाघरों, समाधियों, मजारों की खाक छानते हुए, गली-गली भटकते हुए किसी दीवाने-सा कुछ ढूंढ रहा है, किसी मलंग-सा कुछ कह रहा है, किसी फकीर, किसी जोगी-सा कुछ गा रहा है, आह्वान करता प्रतीत हो रहा है।

यह देखना ऐसे में दिलचस्प होगा कि नरेंद्र मोदी, या कोई और, या स्वयं बनारस अपनी अस्मिता को परिवर्तित परिस्थितियों में किस प्रकार विश्लेषित करता है और उस आधार पर अपने अस्तित्व के संदर्भ में कैसी आकांक्षाएं और अपेक्षाएं इन पहरुओं के समक्ष प्रस्तुत करता है। एक बार अस्तित्व में आ गए शब्द सदैव बने रहते हैं क्योंकि शब्द कभी मरते नहीं।

कांग्रेस के बहुप्रचारित भ्रष्टाचार, ‘आप’ द्वारा अपने बारे में स्वयं निर्मित अनिश्चितता के वातावरण, समाजवादी पार्टी से बनारस के अल्पसंख्यकों के मोह-भंग की स्थिति, और बनारस को सांस्कृतिक राजधानी के रूप में पुनर्प्रतिष्ठित करने के वादे के साथ यहां के चुनावी मैदान में अपने नामांकन के दिन धमक दिखा चुके नरेंद्र दामोदर भाई मोदी अगर चुनाव जीत जाते हैं तो यह उनके समक्ष एक अपूर्व अवसर प्रदान करेगा।

यह वह अवसर होगा जिसके सार्थक और सफल उपयोग से वे गुजरात मॉडल की अपनी क्षेत्रीय और विपक्षियों के निशाने पर रही छवि से आगे निकल कर बनारस की राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय छवि के सदृश अपनी एक सर्वथा नवीन और पहले की तुलना में अधिक स्वीकार्य छवि निर्मित कर सकते हैं।

ब्रांड बनारस’ की संकल्पना पर कार्य करना उनके लिए यहां की राजनीति और वैचारिकियों से उभरी अनिश्चितताओं, आशंकाओं, भय, भेदभाव की विद्यमान स्थितियों से भी पार पाने का अवसर देगा। संभवत: वे भी इस बात को समझ रहे हैं कि चुनाव में व्यक्तिगत और राजग के स्तर पर जीत उनके सामने इस अवसर के साथ-साथ गंभीर चुनौतियां भी प्रस्तुत करेगी।

इन अवसरों और चुनौतियों का जो अक्स बनारस के विशिष्ट स्वरूप में प्रतिबिंबित होता है वह किसी भी नीति-निर्माता और प्रशासक के लि□ □क आदर्श स्थिति है□ हमारा आकलन है कि मोदी प्रयोगधर्मिता और निर्माण के इस आदर्श से किसी भी हाल में वंचित होना नहीं चाहेंगे□ 'ब्रांड बनारस' की दिशा में आगे ब□ना □क समय के बाद उनके राजनीतिक कायाकल्प के अवसर भी निर्मित कर सकता है□ 'ब्रांड बनारस' की संकल्पना समावेशी प्रारूप में अगर फलीभूत हो जाती है तो इसके आश्चर्यजनक वैश्विक परिणाम भी होंगे, क्योंकि विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय, धार्मिक, वैयक्तिक, राजनीतिक, आर्थिक और मानसिक समस्याओं के समाधान के लि□ पूरा विश्व बनारस के बहाने भारतीय विरासतों को जानने-समझने और इनके सूत्रों और कूटों को अपने संदर्भों में विश्लेषित करने के प्रयास में लगा हुआ है□

ब्रांड बनारस की संकल्पना के समावेशी प्रारूप में धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और क्षेत्रीय □कांगीपन के लि□ कोई स्थान नहीं है□ इसमें सबको समाहित कर, सबको साथ लेकर चलने की सैद्धांतिक और व्यावहारिक संभावना□' है□ यह भारत में अंतर्निहित वैश्विक संभावनाओं और सक्षमताओं का द्योतक है और इसे बनारस की समावेशी संकल्पना में सहजता से देखा-पाया जा सकता है□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta